Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)

Paper Indian Philosophy (BA Part I H.)

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
August 20, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lecture No. 17

Class :- BA Part I H

न्याय दर्शन में ईश्वर स्वरूप

न्याय दर्शन ईश्वर वादी दर्शन है। वह ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता है। न्याय सूत्र के रचयिता गौतम है, जिसमें ईश्वर का उल्लेख मिलता है। कणाद ने ईश्वर के संबंध में स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कहा है। बाद के वैशेषिकों ने ईश्वर के स्वरूप की पूर्ण चर्चा की है। इस प्रकार न्याय वैशेषिक दोनों दर्शनों में ईश्वर को प्रामाणिकता मिली है। दोनों में अंतर केवल मात्रा का है। न्याय ईश्वर पर अत्यधिक जोर देता है जबकि वैशेषिक में उस पर इतना जोर नहीं दिया गया है। यही कारण है कि न्याय दर्शन के ईश्वर संबंधी विचार भारतीय दर्शन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। प्रमाण शास्त्र के बाद न्याय दर्शन का महत्व पूर्ण अंक ईश्वर विचार ही है। न्याय ईश्वर को स्थापित करने के लिए अनेक तर्क प्रस्तुत करता है। उन तर्कों को जानने के पूर्व न्याय द्वारा प्रतिष्ठित ईश्वर के स्वरूप को जानना अपेक्षित है।

न्याय दर्शन में ईश्वर को एक आत्मा कहां है, जो चैतन्य से युक्त है। न्याय के मतानुसार आत्मा दो प्रकार की होती है 1. जीवात्मा और 2. परमात्मा। परमात्मा को ही ईश्वर कहा जाता है। ईश्वर जीवात्मा से पूर्ण है।

ईश्वर स्वरूप

ईश्वर का नित्य ज्ञान है। वह नित्य ज्ञान के द्वारा सभी विषयों का अपरोक्ष ज्ञान रखता है। परंतु जीवात्मा का ज्ञान अनित्य, आंशिक और सीमित है।

ईश्वर सभी प्रकार की पूर्णता से युक्त है, जबकि जीवात्मा अपूर्ण है। ईश्वर न बद्ध और मुक्त है। बंधन और मोक्ष शब्द का प्रयोग ईश्वर पर लागू नहीं किया जाता। जीवात्मा इसके विपरीत पहले बंधन में रहता है और बाद में मुक्त होता है।

ईश्वर जीवात्मा के कर्मों का मूल्यांकन कर अपने को पिता के तुल्य सिद्ध करता है। ईश्वर जीवात्मा के प्रति वही व्यवहार करता है जैसा व्यवहार एक पिता अपने पुत्र के प्रति रखता है।

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
August 20, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 17

ईश्वर विश्व का सृष्टि पालक और संहारक है। ईश्वर विश्व की सृष्टि शून्य से नहीं करता है। वह विश्व की सृष्टि पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि के परमाणु तथा आकाश, दिक्, काल, मन तथा आत्माओं के द्वारा करता है। यद्यपि ईश्वर विश्व की सृष्टि अनेक द्रव्यों के माध्यम से करता है फिर भी ईश्वर की शक्ति सीमित नहीं हो पाती। यह द्रव्य ईश्वर की शक्ति को सीमित नहीं करते क्योंकि ईश्वर और इन द्रव्यों के बीच आत्मा और शरीर का संबंध है।

यद्यपि सृष्टि का उपादान कारण चार प्रकार के परमाणु को ही ठहराया जा सकता है, फिर भी ईश्वर का हाथ सृष्टि में अनमोल है। परमाणुओं के संयोजन से सृष्टि होती है। परंतु ये परमाणु गति हीन माने गए हैं। परमाणुओं में गति का संचालन ईश्वर के द्वारा होता है। ईश्वर के अभाव में सृष्टि की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। जगत की व्यवस्था और एकता का कारण परमाणुओं का संयोग नहीं कहा जा सकता, अपितु विश्व की व्यवस्था का कारण कोई सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ व्यक्ति ही कहा जा सकता है। वह सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ व्यक्ति ईश्वर है। इस प्रकार विश्व की सृष्टि ईश्वर के सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ होने का प्रमाण है।

ईश्वर विश्व का पालनकर्ता भी है। वह विश्व की विभिन्न वस्तुओं को स्थिर रखने में सहायक होता है। यदि ईश्वर विश्व को धारण नहीं करें तो समस्त विश्व का अंत हो जाएगा। विश्व को धारण करने की शक्ति सिर्फ ईश्वर में ही है, क्योंकि परमाणु और अदृष्ट अचेतन होने के कारण विश्व को धारण करने में असमर्थ हैं। ईश्वर को संपूर्ण विश्व का ज्ञान है ईश्वर की इच्छा के बिना विश्व का एक पत्ता भी नहीं गिर सकता।

ईश्वर विश्व का सृष्टा और पालनकर्ता होने के अतिरिक्त विश्व का संहर्ता भी है। जिस प्रकार मिट्टी के घड़े का नाश होता है, उसी प्रकार विश्व का भी नाश होता है। जब-जब ईश्वर विश्व में नैतिक और धार्मिक पतन पाता है, तब तब वह विध्वंसक शक्तियों द्वारा विश्व का विनाश करता है। वह विश्व का विनाश नैतिक और धार्मिक अनुशासन के लिए करता है।

ईश्वर मानव का कर्म फल दाता है। हमारे सभी कर्मों का निर्णायक ईश्वर ही है। शुभ कर्मों का फल सुख तथा अशुभ कर्मों का फल दुख होता है। जीवात्मा को शुभ अथवा अशुभ कर्मों के अनुसार ईश्वर सुख अथवा दुख प्रदान करता है।

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
August 20, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lecture No. 17

ईश्वर दयालु है। वह जीवो को कर्म करने के लिए प्रेरित करता है। कर्मों का फल प्रदान कर ही ईश्वर जीवो को कर्म करने के लिए प्रोत्साहित करता है। न्याय दर्शन का ईश्वर व्यक्तित्व पूर्ण है जिसमें ज्ञान सत्ता और आनंद निहित है।

ईश्वर की कृपा से ही मानव मोक्ष को अपनाने में सफल होता है। ईश्वर की कृपा से ही तत्व का ज्ञान प्राप्त होता है। तत्व ज्ञान के आधार पर मानव मोक्षानुभूति की कामना करता है। इस प्रकार ईश्वर की कृपा के बिना मोक्ष असंभव है।

ईश्वर अनंत गुणों से युक्त है। न्याय दर्शन ईश्वर को अनंत मानता है। उसके अनंत गुणों में छः प्रधान गुण हैं :- आधिपत्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान एवं वैराग्य।